❋ 3 अगस्त 2014 (1-12-78) की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ **ज्ञान-**

1] जब रचयिता ही सेवाधारी बन गए तो सर्व रचना आप श्रेष्ठ आत्माओं के आगे सेवा के लिए बाँधी हुई है।

2] जब आसुरी रावण अपने साइन्स की शक्ति से प्रकृति अर्थात् तत्वों को आज भी अपने कन्ट्रोल में रख हैं तो आप ईश्वरीय सन्तान मास्टर रचयिता, मास्टर सर्वशक्तिमान के आगे यह प्रकृति और परिस्थिति दासी नहीं बन सकती।

3] बापदादा बच्चों की श्रेष्ठ प्राप्ति को देख यही कहते कि एक-एक बच्चा ऐसी श्रेष्ठ आत्मा है जो एक बच्चा भी बहुत कमाल कर सकता है। तो इतने क्या करेंगे ? चाबी तो बहुत बढ़िया मिली है, लगाने वाले लगाते नहीं हैं। सभी को चाबी मिली है, न कि कोई कोई को।

4] प्रजा अर्थात् सदा हर बात में अधीनता के संस्कार। उसको कितना भी अधिकारी पन की स्टेज का तख्त दो लेकिन तख्तनशीन बन नहीं सकते। सदा निर्बल और कमजोर आत्मा दिखाई देंगे। स्वयं की हिम्मत नहीं होगी लेकिन दूसरे की हिम्मत और सहयोग से कार्य सफल कर सकते हैं। और हिम्मत बढ़ाने के लिए सहयोग और चीज़ है। हिम्मत देंगे तो कर सकेंगे। यह अधिकारीपन की निशानी नहीं है। हिम्मत रखने से सहयोग के पात्र स्वत: ही बनेंगे।

5] कुमारों का चित्र सदा बाप के साथ रहने का दिखाया है, तुम्हीं से खेलूं, तुम्हीं से खाऊं– यह चित्र दिखाया है सखे रूप से। सखा अर्थात् साथ। तो कुमारों को सखा रूप से साथी रूप में दिखाया है, ग्वालबाल के रूप में दिखाया है ना।

6] कुमारों की यही कम्पलेन है कि हम अकेले हैं। यह साथ तो दु:ख सुख का साथी है। **वह साथ तो माथा खराब कर देता।** तो युगल हो ना ! प्रवृत्ति वाले नहीं हो, सुख की प्रवृत्ति मिल जाए और क्या चाहिए। **हमारे जैसा साथी किसी को मिल नहीं सकता। साथी को साथ रखना- साथ रखेंगे तो मन सदा मनोरंजन में रहेगा।**

7] माताओं को विशेष विघ्न मोह का ही आता है। नष्टोमोहा अर्थात् तीव्र पुरूषार्थ। अगर जरा भी मोह चाहे देह के सम्बन्ध में है तो तीव्र पुरूषार्थी के बजाए पुरूषार्थी में आ जाते। तीव्र पुरूषार्थी हैं फर्स्ट नम्बर, पुरूषार्थी हैं सेकेण्ड नम्बर। क्या भी हो, कुछ भी हो खुशी में नाचते रहो। ''मिरूआ मौत मलूका शिकार'' इसको कहते हैं नष्टोमोहा। नष्टोमोहा वाले ही विजय माला के दाने बनते हैं। मोह पर विजय प्राप्त कर ली तो सदा विजयी। पास हो या फुल पास हो? पेपर बहुत आयेंगे, पेपर आना अर्थात् क्लास आगे बढ़ना। अगर इम्पहान ही न हो तो क्लास चेन्ज कैसे होगा ! इसलिए फुल पास होना है, न कि पास होना है।

8] ड्रामा अनुसार जो विशेषता प्राप्त है उसे सदा कार्य में लगाओ तो औरों की विशेषता दिखाई देगी। विशेषता न देख बातों को देखते हो इसलिए हार होती है। हरेक की विशेषता की स्मृति में रखो। एक-दो में फेथफुल रहो तो उनकी बातों का भाव बदल जायेगा। अगर आपस में दो मित्र होते हैं और उनके बीच तीसरा उनकी ग्लानि करने आता हहै तो वह उसके भाव का बदल देते हैं। जैसे आपको कोई ब्रह्मा बाप के लिए कहे कि यह क्या, यह तो गाली देते हैं– लेकिन तुम उन्हें निश्चय से समझायेंगे कि यह गाली नहीं है यह तो स्पष्टीकरण है। जहाँ निश्चय होता है वहाँ शब्द का भाव बदल साधारण बात हो जाती है। हरेक की विशेषता को देखो तो अनेक होते भी एक दिखाई देंगे। एक मत संगठन हो जायेगा। कोई किसकी ग्लानि की बातें सुनावे तो उसे टेका देने के बजाए सुनाने वाले का रूप परिवर्तन कर दो। अर्थ में भावना परिवर्तन कर दो। यह अभ्यास चाहिए नहीं तो एक की बात दूसरे से सुनी, दूसरे की बात तीसरे से सुनी और फिर वह व्यर्थ बातें वातावरण में फैलती रहती, जिस कारण पावरफुल वातावरण नहीं बन पाता। साक्षात्कार मूर्त भी नहीं बन सकते। इसलिए सदैव सबके प्रति शुभ भावना, कल्याण की भावना हो। एक-दो की ग्लानि की बातें सुनना टाइम वेस्ट करना है। कमाई से वंचित होना है। अगर परिवर्तन कर सकते हो तो सुनो– नहीं तो सुनते हुए भी नहीं सुनो?

9] हरेक की विशेषता का वर्णन करो। कोई कहे भी कि हमने ऐसा देखा तो भी आपके मुख से कोई ऐसी बात न निकले। आप उनकी विशेषता सुनाकर उस बात को चेन्ज कर दो। सबके मुख से हरेक के प्रति वाह-वाह ! निकले ! तब ही बाप की वाह-वाह ! होगी ! कोई की बात अगर नीचे ऊपर देखते हो, सुनते हो तो दिल में नहीं रखो, ऊपर दिया और खत्म। अपने आप को सदा खाली और हल्का रखो। अगर दिल के अन्दर किसी भी प्रकार की बात होगी तो जहाँ बातें हैं वहाँ बाप नहीं।

...2

[2]

10] किसके अवगुण को एक दो के सामने वर्णन नहीं करना चाहिए क्योंकि वर्णन करना अर्थात् बीमारी के जर्म्स को फैलाना। कोई ऐसे जर्म्स होते हैं तो उसी समय कोई पावरफुल दवाई डाल खत्म किया जाता है। कोई पूछे फलाना कैसे है तो दिल से निकले बहुत अच्छा है। अनेक भावों से अनेक आत्मायें आती हैं लेकिन आप की तरफ से शुभ भावना की बातें ही ले जाये। भावना शुभ हो, एक भावना, एक कामना एक की ही लगन में निर्विघ्न। व्यर्थ बातों का स्टॉक खत्म और खुशी की बातों का स्टॉक जमा हो। खुशी में झूलने वाली आत्मायें सबको नज़र आयें। हर बोल में रूहानियत हो, रूहानियत के शब्द बहुत मीठे होते हैं। समय प्रमाण स्टेज भी बहुत ऊंची होनी चाहिए। चढ़ती कला का अर्थ ही है जो पहले था उसको पार कर चलें। ऐसी स्थिति होनी चाहिए जो साक्षात्कार मूर्त दिखाई दें, फिर देखो कितनी भीड़ होती है। तुम्हारी स्थिति सदैव एकाग्र रहे तब नाम बाला होगा। वृत्ति की, दृष्टि की, स्वभाव की चेकिंग करने वाले सब आयेंगे लेकिन उन्हें रीयल ज्ञान का परिचय हो जाए।

❋ योग-

1] जो बाप की याद में रहते उनके ऊपर सदा बाप का हाथ है। सभी मोस्ट लकी हो।

❋ धारणा-

1] ऐसे जादू की चाबी जिससे जिस शक्ति का आवाह्न करो उस शक्ति का स्वरूप बन सकते हो। एक सेकेण्ड में इस जादू की चाबी द्वारा जिस लोक में जाने चाहो, उस लोक के वासी बन सकते हो। जिस काल को जानने चाहो उस काल को जानने वाले रूहानी ज्योतिषी बन सकते हो। संकल्प शक्ति को जिस रफ्तार से जिस मार्ग पर ले जाना चाहो उसी रीति से संकल्प शक्ति के अधिकारी बन सकते हो।

2] अच्छी चीज़ को सम्भाल कर किनारे रखते हैं ना कि समय पर काम में लायेंगे, लेकिन यह चाबी हर समय कार्य में लाओ। चाबी लगाओ और खजाना लो। इसमें एकानामी नहीं करो लेकिन एकनामी बनो। एकनामी बनना ही चाबी को लगाने का तरीका है।

3] कोई भी कर्म शुरू करने के पहले जैसा कर्म वैसी शक्ति का आवाह्न इस चाबी द्वारा करो– तो हर शक्ति आप मास्टर रचता की सेवाधारी बन सेवा करेगी।

4] आवाहन् करो अर्थात् मालिक बन ऑर्डर करो। यह सर्वशक्तियाँ आपकी भुजायें समान हैं, आपकी भुजायें आपके ऑर्डर के बिना कुछ नहीं कर सकती हैं। ऑर्डर करो सहनशक्ति कार्य सफल करो तो देखो सफलता सदा हुई पड़ी है।

5] अब क्या करेंगे ? कर सकेंगे वा नहीं कर सकेंगे ! महाकाल के बच्चे भी डरें तो और कौन निर्भय होंगे? हर बात में निर्भय बनो। अलबेले और आलस्यपन में निर्भय नहीं बनना, मायाजीत बनने में निर्भय बनो। तो सुना जादू की चाबी। सौगात को सम्भालना सीखो और सदा कार्य में लगाओ।

6] कभी अकेले का संकल्प नहीं करना। साथी को सदा साथ रखो तो सदा खुश रहेंगे और दिन-रात खुशी में नाचते अपना और दूसरों का भविष्य बनायेंगे। अकेला कभी नहीं समझना। अकेला समझा और माया आई।

7] बाप के सम्बन्ध से सौदा कर दिया, इसी से मायाजीत, मोह जीत विजयी रहेंगे।

8] कहीं भी रहे लेकिन हर कर्म, हर दिनचर्या में सदा बाप के साथ का अनुभव करो।

9] सन्तुष्टता ब्राह्मणों का विशेष लक्षण है। जो भी पार्ट मिला है उसमें सन्तुष्य रहना ही आगे बढ़ना है। कुछ भी नीचे ऊपर हो जाए, कोई इनसल्ट भी कर दे, लेकिन दाता के बच्चे कभी किसी बात में असन्तुष्ट नहीं हो सकते। वे स्वयं से भी सन्तुष्ट और औरों से भी सन्तुष्ट होंगे। इसके लिए दृढ़ता सम्पन्न संकल्प करो कि कितना भी कड़ा पेपर आ जाए लेकिन मुझे सन्तुष्ट रहना ही है तो सफल होते रहेंगे।

❋ सेवा-

1] – – –